

छंद

- ⇒ छंद शब्द संस्कृत के 'चद्' धातु से बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ **खुश करना** होता है, अर्थात् अक्षरों की संख्या, मात्रा, गणना, गति को क्रमबद्ध तरीके से लिखना छंद कहलाता है।
- ⇒ छंद का दूसरा नाम **पिंगल** है क्योंकि छंदशास्त्र के रचयिता आ. पिंगलमुनि है।
- ⇒ छंद का सर्वप्रथम उल्लेख '**ऋग्वेद**' में मिलता है।



CAREER FOUNDATION

छंद का कार्य –

जुनून राष्ट्र सेवा का

- ⇒ छन्दबद्ध रचनाएँ सरलता से कण्ठस्थ हो जाती हैं।
- ⇒ छन्द के कारण काव्य में गेयता आ जाती है।
- ⇒ छन्द से काव्य का प्रभाव बढ़ जाता है।

छंद के प्रमुख अंग

- 1.पद / चरण
- 2.वर्ण और मात्रा
- 3.गण (गिनना)

4. गति (बहाव)

5. यति (विराम)

6. तुक (लय)

छंद के प्रकार –

1. मात्रिक छंद
2. वर्णिक छंद
3. मुक्तक छंद

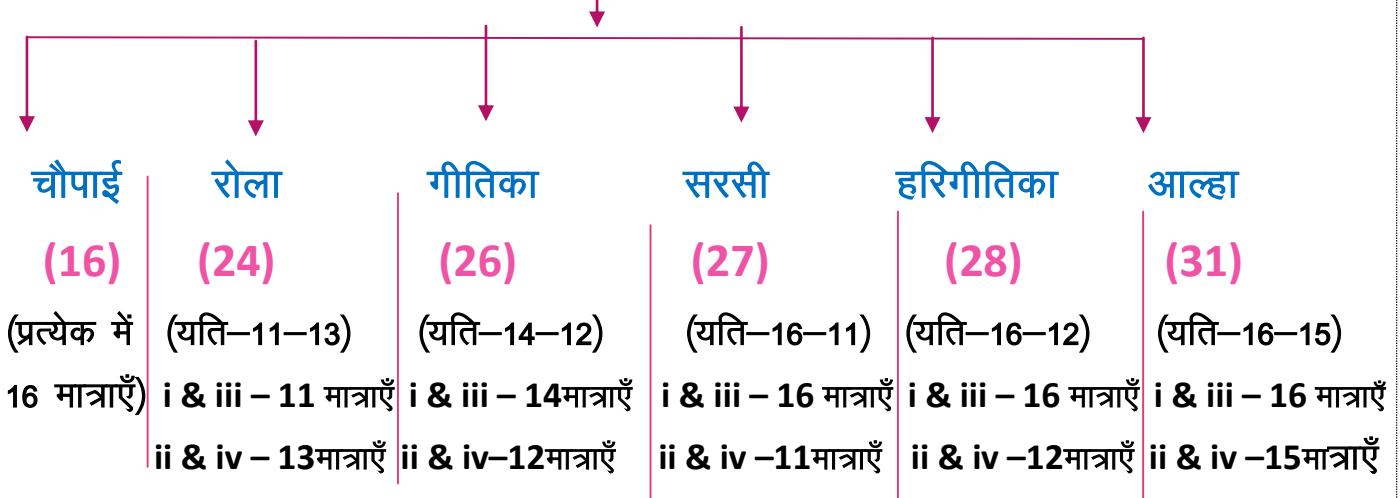
1. मात्रिक छंद – i) सममात्रिक छंद – 6

ii) अर्द्धसममात्रिक छंद – 4

iii) विषम मात्रिक छंद – 2

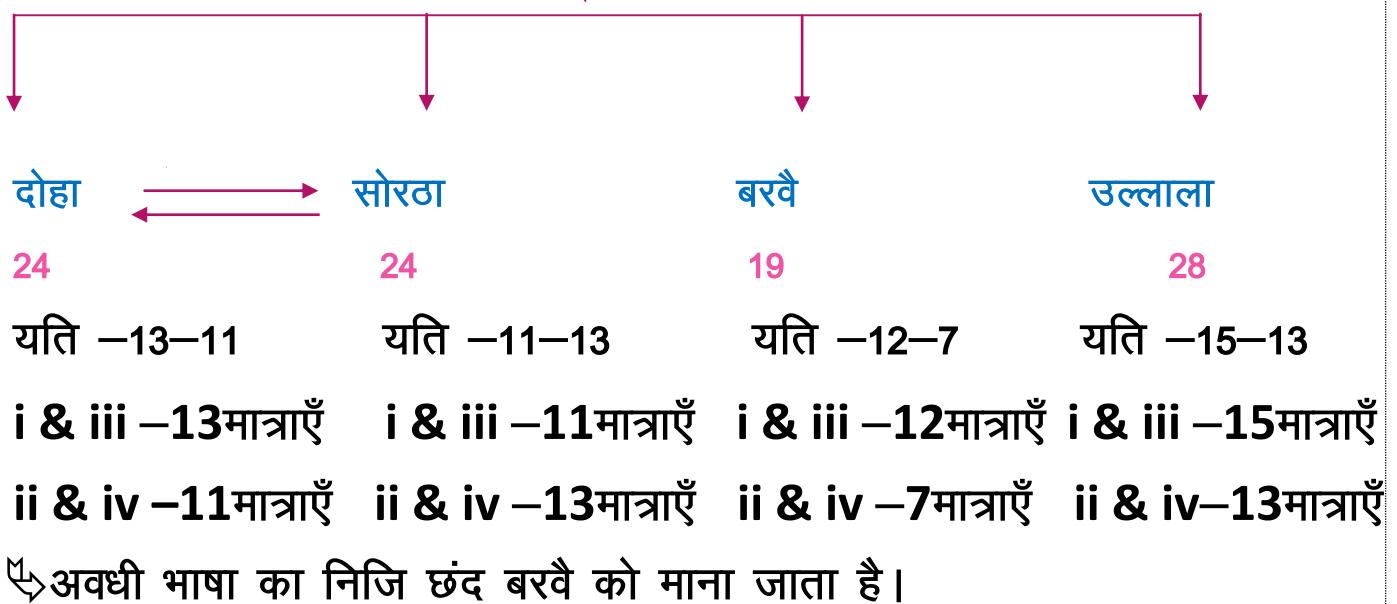


(सममात्रिक छंद) (चार चरण)



ऐसोरठा के सामान्य ही रोला छन्द होता है। लेकिन सोरठा अर्द्धमात्रिक छंद के अन्तर्गत आता है

अर्द्धसममात्रिक छंद (चरण चार)



विषममात्रिक छंद (चरण छः)



CAREER FOUNDATION

(रोला+दोहा)

24 + 24

(यति 11-13) + (यति 13-11)

FOUNDA

जुनून राष्ट्र सेवा का

छप्पय

(रोला+उल्लाला)

24 + 28

(यति 11-13) (यति 15-13)

प्रथम चार चरण – रोला छंद

अंतिम दो चरण – उल्लाला छंद

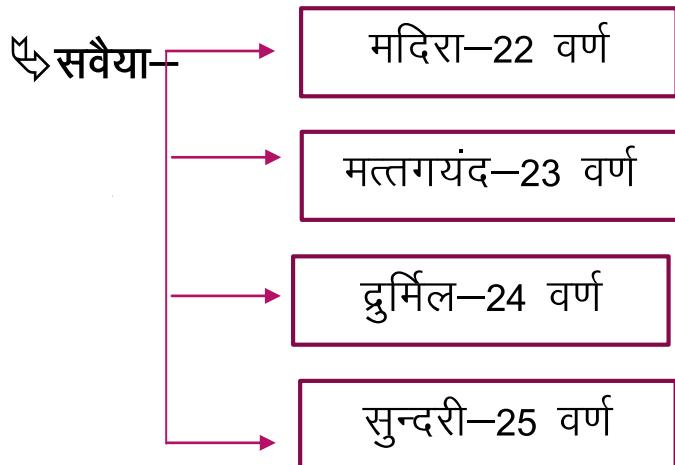
→ विषममात्रिक छंद को संयुक्त छंद भी कहा जाता है।

→ प्रथम व अंतिम शब्द सामान होते हैं।

2. (वर्णिक छंद)

→ घनक्षरी – रूपघनाक्षरी – (32) –8-8 –8-8 मात्राएँ

देवघनाक्षरी –(33)–8-8-8-9 मात्राएँ



3..मुक्तक छंद-

↳ कविता का वह रूप जो किसी छन्दविशेष के अनुसार नहीं रची जाती है न ही तुकान्त होता है, वह मुक्तक छंद कहलाता है।

↳ हिन्दी में मुक्तक छंद के प्रवर्तक **सूर्यकांत त्रिपाठी निराला जी** को माना जाता है।

माना जाता है। **EEF FOUNDATION** जुनून राष्ट्र सेवा का जैसे— वह तोड़ती पत्थर देखा मैंने उसे,
इलाहाबाद के पथ पर ॥